सच्चा साहित्य वही, जो हमेशा प्रासंगिक रहे : राष्ट्रपति

- राष्ट्रपति भवन में दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन का उद्घाटन
- साहित्य समाज का मार्गदर्शन करता है: गजेंद्र सिंह शेखावत

संस्कृति मंत्रालय व साहित्य अकादमी की ओर से राष्ट्रपति भवन में शुरू हुए दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन को संबोधित करतीं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ● सौ: आयोजक

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली: बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में साहित्य ने भी रूप बदला है। संस्थाएं बदली हैं, चुनौतियां बदली हैं, प्राथमिकताएं बदली हैं और साहित्य भी बदला है, लेकिन सच्चा साहित्य वही है जो समय बीतने के बाद भी प्रासंगिक बना रहे। "स्नेह और करुणा जैसे भावनात्मक संदर्भ बदल सकते हैं, लेकिन उनकी मूल संवेदना नहीं बदलती। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने बृहस्पतिवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र में शुरू हुए दो दिवसीय साहित्यिक सम्मेलन "साहित्य कितना बदला है?" का उद्घाटन करते हुए ये बातें कहीं।

कार्यक्रम में राष्ट्रपति ने कहा कि छात्र जीवन से ही उन्हें साहित्य और साहित्यकारों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता की भावना रही है। समय के साथ यह भावना और भी गहरी होती गई है। उन्होंने कहा कि यह उनकी इच्छा थी कि अनेक साहित्यकार राष्ट्रपति भवन आएं और आज यह अवसर साकार हुआ। राष्ट्रपति ने कहा कि हमारे देश में अनेक भाषाओं और असंख्य साहित्यिक परंपराओं की समृद्ध विरासत है। इस विविधता में भारतीयता का अद्भुत स्पंदन महसूस होता है। यह भावना देश के सामूहिक अवचेतन में गहराई से समाई हुई है। उन्होंने कहा कि वह देश की सभी भाषाओं और बोलियों को अपनी भाषा मानती हैं, और उन सभी का साहित्य उन्हें अपना साहित्य प्रतीत होता है। विशिष्ट अतिथि संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि साहित्य समाज के, समाज की भावनाओं के और समाज की स्थितियों के दर्पण स्वरूप है। दर्पण होने के साथ-साथ यह समाज के मार्गदर्शन का काम भी करता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारा देश सांस्कृतिक पुनरुद्धार के दौर से गुजर रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्य सृजकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इससे पहले संस्कृति मंत्रालय की विशेष सचिव और वित्तीय सलाहकार रंजना चौपड़ा ने स्वागत भाषण दिया। साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने अतिथियों का अभिनंदन किया।

कवि सम्मेलन में सुनाई कविताएं: उद्घाटन सत्र के बाद 'सीधा दिल से: कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उर्दू शायर शीन काफ निजाम ने की एवं इस सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्य अकादमी के अध्यक्ष माधव कौशिक उपस्थित रहे। कविता-पाठ करने वाले कवियों में रणजीत दास (बांग्ला), ममंग दई (अंग्रेजी), दिलीप झवेरी (गुजराती), अरुण कमल (हिंदी), महेश गर्ग (हिंदी), शाफी शौक (कश्मीरी), दमयंती बेशरा (संताली) और रवि सुब्रह्मण्यम् (तमिल) ने कविता पढ़ीं। अकादमी के सचिव डा. के. श्रीनिवासराव ने सभी कवियों का पारंपरिक अंगवस्त्रम प्रदान कर अभिनंदन और स्वागत किया।